



श्रुं गार पटल

'कनोर'

यह काव्य एक विचार मात्र पर लिखा गया है, "स्त्री वह श्रृंगार कर ही नहीं सकती जैसा वह चाहती है। इसके मुख्यतः दो कारण हैं। पहला कारण स्त्री का दर्पण में देख कर श्रृंगार करना। दर्पण में हमको हमारा विलोम दिखाई देता है। अर्थात् हम अपनी वास्तविकता से भिन्न देखते हैं। और दूसरा कारण भी दर्पण ही है। जी हाँ, यहाँ इस दर्पण से मेरा अर्थ समाज से है। यहाँ के रीतिरिवाजों से है। जो स्त्री के सजने संवरने को लेकर बनाए गए हैं।"

इस काव्य की रचना स्त्री और उसके श्रृंगार पटल के मध्य जो व्यवहार है उसके इर्दगिर्द रह कर की गई है। इस काव्य में आपको सौंदर्य, स्त्री और प्रेम जैसे विषयों के निकट पहुँचाने का प्रयत्न किया गया है। स्त्री और दर्पण दोनों किस प्रकार से एक दूसरे के साथ हैं। कैसे दर्पण स्त्री का मित्र बन सकता है। इन सभी बातों को काव्य में दर्शाने का प्रयास किया है।

आशा है आप सबके मन तक पहुँचे। यदि पसन्द आए तो अपनी शुभकामनाएं अवश्य पहुँचाइयेगा एवं अपने मित्रों के साथ भी साझा कीजिएगा।

धन्यवाद,



काव्य : श्रं गार - पटल

विधा : रूबाइयाँ

भाषा : हिं दी



श्रृंगार न स्त्री कर पाए, वह जो उसके हृदय भाए ।
साज ओ' श्रृंगार लिए, क्षण क्षण प्रति पल दर्शाए ।
'मन चाहे सजा लू इसको', 'मन चाहे इसको पहनूँ'
देख प्राण कदी देख दर्पण, मन ही मन में मुस्काए । [१]

दायां कपोल बायां दिखे, बाएं को दायां दिखलाए ।
ऐसा अभिनय करे दर्पण, भेद न कोई समझ पाए ।
खेल दर्पण कितना कर ले, नही सक्षम यह जान ले
सहसा नही दिखा सकता, निज स्त्री उर जो भाए । [२]

भिन्न भिन्न वस्त्रों को पहने, अद्भुत अनुपम रूप बनाए ।
अधर लाली कर मध्य रंगोली, कर्ण सुनहरे चमकाए ।
मानो मोहनी धरा आई, स्वर्ग से कोई अप्सरा आई
हरने प्रिय का ध्यान मन, बन ठन देखो है इठलाए । [३]

बहु यत्न प्रयत्न करती किंतु, एक सरल न कर पाए ।
नयनों में भर ले काजल, नयनों से नयन मिलाए ।
जो प्रियतम के होगा उर में, अतिप्रिय सभी बता देंगे
कौन कह पाता पूर्ण सत्य, कौन सत्य छुपा पाए । [४]

स्त्री दर्पण में दृष्टि लगाए, बारंबार देखे शरमाए ।
चाहे वो जो दर्पण से, दर्पण उसके विपरीत दिखाए ।
गुत्थी है यह अभी हल नहीं, समस्या है सरल विकल नहीं
क्या करे स्त्री जिससे वह, जैसा चाहे श्रृंगार पाए । [५]

बाधा विकट खड़ी पाए, जब नारी मुकुर निकट आए ।
कौन ज्ञान गणित हो जिससे, हल इसका निकल आए ।
बुद्धिजीवी बन बैठ विद्वानों, ने एक समाधान दिया
पिया की आँखों से देखे, जब प्रियसी स्वयं को सजाए । [६]

प्रीत प्रेम के रस से मुझे, श्रृंगार बड़ा कोई बतलाए ।
वनिता कविता श्रृंगार रस की, जिसमें रंग कई दिखलाए ।
कामिनी का है एक भाव प्रेम, रमणी का है धूप छांव प्रेम
प्रेम में पड़ी स्त्री से पूछो, प्रेम क्या क्या सिखलाए । [७]

नारी दर्पण का प्रेम अनोखा, शोभा को दर्पण ही भाए ।
सुंदर स्त्री कोई देख दर्पण, देख उसका जी मचलाए ।
सौ दर्पण स्त्री समीप रखो, पश्चात उसके तुम देखो
स्त्री वो क्या स्त्री है, दर्पण बिन देख जो रह जाए । [८]

पुरुष प्रेम मुख पर रखे, स्त्री प्रेम भीतर बसाए ।
कला यह रहस्य छुपाने की, स्त्री को परिपक्व आए ।
माँ ने पुत्र को जन्म दिया, कवच कुंडल संग छोड़ दिया
क्षण बार बार लिए दर्पण, समक्ष स्त्री के कई आए । [९]

नारी को व्याधि संसार समझ, जगत जो इतना इतराए ।
उसके अलंकार मात्र से जिसका, अस्तित्व विस्मृत हो जाए ।
स्त्री के रूप अनेक सखा, उसे केवल श्रृंगार नहीं भाता
संहार करे देवी दुर्गा, प्रलय काल काली बन जाए । [१०]

दर्पण सम्मुख जब बैठ सखी, मुकुर-स्त्री को देखे जाए ।
स्वयं की प्रतिलिपि देखे, उर उसके चंचलता आए ।
'वह कौन है उस पार सखी, मैं तो नहीं हूँ, हूँ मैं तो यहीं' ?
ढूँढ सखी ऐसे प्रियतम जो, इस संशय को सुलझा पाए । [११]

हो एक वार्ता ईश्वर से, जिसमें प्रश्न विशिष्ट पूछा जाए ।
'है प्रभु! अबला कौन है, कौन इसका गूढ़ भेद बताए' ?
सृष्टि सृजन कर्ता प्रमुख, है ब्रह्मा की संतान सभी
अनुमान यही है उत्तर का, यदि जिज्ञासा पूछी जाए । [१२]

ले चलूँ मैं उसके निकट तुम्हे, सजनी संगिनी जिसे कहा जाए ।
गजरा उठा कर पटल ओर लोचन, केश स्वयं के सुलझाए ।
रँग बिरंगे परिधान पट पहने, लगा रम्य दृश्य का घट बहने
जाना पिया संग बगिया में, है अतिउत्साह में हिलोरें खाए । [१३]

है भारत भाल हिमालय, मस्तक मध्य टिकुली लगाए ।
आँचल कच्छ पहने पश्चिम, पूर्व नीर जल गगरी उठाए ।
सज सँवरती नारी भारतीय, विश्व में भारत जैसे कमनीय
उठ हुई खड़ी पश्चात श्रृंगार के, अब्धुत दृप्त दृश्य बनाए । [१४]

मृदल पाँव नूपुर सजे, बजे छन छन घुँघरू शोर मचाए ।
है रहस्य पग पग रखने पर, ध्वनि कर जब पाजेब जाए ।
हो गया है अब श्रृंगार पूर्ण, हो गया है सब संसार शून्य
कपाट खोल गृह के निकल, भाँति सुधाधर आए । [१५]

सम्भव है, विषमता कथनों में, यदि मेरे तुम्हारे आए ।
स्वागत है उन विचारों का भी, जो तुम्हारे शीश में आए ।
आरंभ है यह १६ श्रृंगार से, स्त्री से, उसके विचार से
प्रयत्न कर नारी मन जान, जो 'श्रृंगार-पटल' के बनाए । [१६]



'शृंगार पटल' का पहला भाग आपके साथ साझा किया। आनन्द की अनुभूति हो रही है हमेशा से स्त्री सौंदर्य ही मेरा प्रिय विषय रहा है। यही प्रेम मुझे सौंदर्य के विषय पर लिखने के लिए बाध्य करता है।

कलम अपने आप उठती है। आपने भी काव्य में देखा होगा कि स्त्री को हर तरह से सुंदर दिखाने का प्रयत्न किया गया है। और हो भी क्यों न, हम सबकी जननी धरती माँ स्वयं में भी कितनी सुंदर है। स्त्री से अर्थ मेरा सिर्फ महिला से नहीं अपितु पूर्ण सृष्टि से है।

जिस तरह शिव, देवी शक्ति बिन पूर्ण नहीं है। उसी प्रकार हम भी पूर्णता के लिए स्त्री पर ही आधारित है। इसमें कोई संदेह नहीं।

यही बात हमको समझना है। मेरा मानना है कि हमे स्त्री को पुरुष के बराबर करने का कोई प्रयत्न नहीं करना चाहिए। स्त्री को स्त्री ही रहने दीजिए। बस स्त्री को पुरुष से निम्न समझने की भूल न करें। वो सम्मान की अधिकारिणी है आप उस पर उपकार न करें।

धन्यवाद,

पंकज व्यास 'कजोर'